# “उपसंहार”

# उपसंहार

साहित्य एक अनुभूति है। साहित्यकार अपने अनुभूति पर समाज में घटित होता है उसका चित्रण करता है। अत: साहित्य और समाज का परस्परावलंबी संबंध है। साहित्यकारों ने समाज के विविध अंगों के चित्रण के साथ 'ग्रामीण जनजीवन का भी चित्रण' स्वअनुभूति के साथ साहित्य में किया है। भारत देश को 'ग्रामों का देश' कहा जाता है। साहित्यकार अपनी भूमि, अपने परिवेश, अपने समाज से हटकर सिर्फ कल्पना जगत में न रहकर वह यथार्थ भूमि पर उतरकर सुख-दु:खात्मक अनुभूति से साहित्य सृजन करता है। हिन्दी उपन्यास इसी यथार्थ चित्रण और प्रामाणिकता का उदाहरण है। हिन्दी साहित्य जगत में नागार्जुन का स्थान महत्त्वपूर्ण है। उन्होंने हिन्दी साहित्य में आँचलिक उपन्यासों की पहल की है। इसीलिए उन्हें हिन्दी साहित्य के सशक्त हस्ताक्षर माने जाते है।

हिन्दी उपन्यास साहित्य में नागार्जुन का अपना विशिष्ट स्थान है। नागार्जुन ने अपने उपन्यासों में जिस ग्रामीण समाज का चित्रण किया है, वह उनका अपना परिवेश है और उसी समाज में रहते हुए स्वयं ने दु:ख, दर्द को सहा और भोगा उसीका चित्रण है। उन्होंने अपने साहित्य में निम्नवर्गीय समाज की पीडाओं, वेदनाओं और समस्याओं का अंकन किया है। ग्रामीण समाज जीवन की यथार्थ अभिव्यक्ति करना यही उनकी प्रमुख विशेषता रही है। उन्होंने अपने उपन्यासों में मिथिला के ग्रामों, वहाँ के जन जीवन तथा जमींदारों द्वारा किसानों का होनेवाला शोषण, सरकारी विकास योजना, शोषण के विविध आयाम, ग्रामों का परिवर्तित स्वरूप एवं प्राकृतिक चित्रण का अंकन बडी कुशलता से किया है। नागार्जुन ने इसके साथ-साथ नये संबंध, नये बोध, जीवन संघर्ष, पारिवारिक विघटन, सांप्रदायिकता, राजनीतिक टकराव, नारी जीवन तथा उनकी समस्याएँ आदि पर प्रकाश डाला है।

नागार्जुन को किसी धारा विशेष के अन्तर्गत नहीं रखा जा सकता है। नागार्जुन सच्चे अर्थो में पीड़ित, शोषित, दलित जनता के प्रतिनिधि है, मानवता के सजग प्रहरी हैं, जो समाजवाद और जनतंत्र दोनों में विश्वास रखते है। मिथिला के अंचल के तालाबों, नदियों और वहाँ के ग्रामीण जीवन को इनकी समग्रता के साथ अपने निजी अनुभवों के आधार पर संवेदनशील गहराई से कागज पर उतारा है, जिसे हिन्दी उपन्यासों में एक उपलब्धि माना है। यही कारण हैं कि 'नागार्जुन के उपन्यासों में चित्रित ग्रामजीवन' यह विषय मैंने लघु-शोध-प्रबंध के लिए चुना।

नागार्जुन का व्यक्तित्व और कृतित्व श्रेष्ठतम है। उनके व्यक्तित्व और कृतित्व में कोई मौलिक भेद नहीं है। उनका जन्म सतलखा ग्राम में जून 1911 ई. में मैथिल ब्राह्मण के संस्कृत पंडित

परिवार में हुआ। पिता श्री गोकुल मिश्र के साथ महिषी ग्राम में उनका बचपन बीता। माता उमादेवी का प्यार, दुलार उन्हें चार साल से ज्यादा नहीं मिला। पिता की यायावरी प्रवृत्ति और परिवार के प्रति दायित्व हीनता ने उन्हे एक जगह टिकने नहीं दिया। उनका बचपन निम्न जाति के लोगों के साथ ही बिता। पढ़े-लिखे एवं दरिद्र होने के कारण उनके पिता उन्हें कभी टोकते नहीं थे। उन्होंने अपने बचपन में जो विपतियाँ झेली, समाज में उच-नीच का भेदभाव देखा, गरीब किसानों की दयनीय अवस्था देखी, जमींदार-किसान संघर्ष आदि को देखा और अपने अनुभव के साथ इन सब बातों का चित्रण अपने सहित्य में यथार्थता से किया। पाठशाला से लेकर साहित्य शास्त्र में आचार्य तक पढ़ने के बाद नागार्जुन बैद्यनाथ मिश्र से 'नागार्जुन' बने। अपने व्यक्तिगत जीवन में भोगे कटू यथार्थ ने उनमें अटूट आस्था व अदम्य जिजीविषा पैदा की है। ग्रामीण समाज में व्याप्त वर्ग वर्गभेद, वर्ग संघर्ष, शोषण,उत्पीड़न तथा ग्रामीण जीवन के चित्रण करते हुए उन्होंने उपन्यास, काव्य, कहानी, यात्रा-प्रसंग, संस्मरण, निबंध आदि का लेखन किया जो हिन्दी साहित्य की महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है।

नागार्जुन ने अपने उपन्यासों में ग्रामजीवन पर अधिक बल दिया है। ग्रामीण जीवन के रोजमर्रा जिन्दगी का चित्रण नागार्जुन के उपन्यासों में सजीव-सा लगता है। अत: नागार्जुन अपने उपन्यासों में ग्रामजीवन का चित्रण करने में सक्षम लगते है।

नागार्जुन ग्राम-जीवन से जूडे होने के कारण ग्रामीण जन जीवन से सम्बन्धित सामाजिक संदर्भों का चित्रण स्वानुभावों के आधार पर किया। ''नागार्जुन के उपन्यासों में चित्रित ग्राम-ज़ीवन' इस लघु-शोध-प्रबंध में 'रतिनाथ की चाची', 'बलचनमा', 'नई पौध', 'बाबा बटेसरनाथ' आदि आलोच्य उपन्यासों का आधार लिया है। यहाँ पर ग्राम तथा ग्राम संकल्पना, स्वरूप आदि पर भी विचार किया है। प्राचीन काल से आज तक के ग्रामों के स्वरूप के बारे में संक्षेप चित्रण किया है। ग्रामीण समाज जीवन की सभी विशेषताएँ नागार्जुन के उपन्यासों में मिलती है। नागार्जुन ने अपने उपन्यासों में सामाजिक पक्ष को स्पष्ट करने के लिए ग्रामीण लोगों का पारिवारिक जीवन, नारी जीवन, शिक्षा, विवाह, प्राकृतिक प्रकोप, जातीयता, अंधविश्वास, रूढ़ि-परम्परा, देवी-देवता, किसानों की स्थिति, किसान-जमींदार संघर्ष, रहन-सहन, विकास योजनाएँ आदि बातों का समाज जीवन पर पडनेवाले असर का यथार्थता से चित्रण किया है। वे मानते हैं कि - ''अस्सी प्रतिशत जनता या किसान हमारे इष्ट देवता हैं जो जीवन के आस-पास फैली हुई है। मैं भी उन्हीं के साथ जूडा

हूँ, उनसे बात करता हूँ। मैं ऐसे वर्ग के प्रतिनिधि नहीं चुनता जिसमें मैं नही हूँ।''इससे स्पष्ट है कि, उन्होंने निम्न तथा मध्य वर्ग की जनता, किसानों का चित्रण अपने उपन्यासों में किया है।

भारतीय समाज व्यवस्था को अंधविश्वास ने खोखला कर दिया है। भारतीय ग्रामों के लोग अज्ञानी, अशिक्षित और धार्मिक होने के कारण अंधविश्वास को बढावा देते है। नागार्जुन ने इसका चित्रण अपने उपन्यासों में किया है। 'बलचनमा' में खुद बलचनमा का पेडों पर भूत का बसेरा होता है, यह माना अंधविश्वास का प्रतीक है। 'रतिनाथ की चाची' में जयनाथ द्वारा विद्या आरम्भ के लिए कौनसा दिन अच्छा होगा यह मानना। 'बाबा बटेसरनाथ' में बटवृक्ष को बकरे की बलि चढ़ाना आदि घटनाएँ अंधविश्वास देहाती लोगों में होने का प्रमाण है।

प्राचीन काल से ग्रामों में रहनेवाले लोग धार्मिकता से परम्परागत और प्रचलित रीति-रिवाजों के अनुसार देवी-देवताओं की पूजा करते है। 'रतिनाथ की चाची' में शुभंकरपुर के लोग ग्रामदेवता को मानते थे, अत: उनकी पूजा-अर्चा में अपना वक्त बिताते थे। 'नई पौध' में खोखा पंडित का खानदान पंचदेवता का उपासक होने के प्रमाण मिलते है। लेकिन नागार्जुन के मतानुसार सच्ची देवता 'मानव' है। यही संस्कार देहाती लोगों पर होने चाहिए ऐसी उनकी धारणा है। यही प्रगतीशील विचारधारा रही है।

भारतीय समाज व्यवस्था में नारी को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया है फिर भी उस पर अन्याय, अत्याचार होते है तथा उसका शोषण किया जाता है। नागार्जुन ने अपने साहित्य में ग्रामीण नारी जीवन का यथार्थ चित्रण किया है। उनके अनुसार ''ग्रामीण नारी आज भी असुरक्षित जीवन जी रही है।'' 'रतिनाथ की चाची' में ग्रामीण जीवन के आधार पर एक उच्चकुलीन विधवा के माध्यम से भारतीय नारी के दुर्भाग्य की कहानी कही गयी है। 'बलचनमा' में रेबनी पर हुए अत्याचार का चित्रण हुआ है। 'नई पौध' में नारियों को 'अनमेल विवाह' जैसी बुरी कुप्रथा का सामना करना पड रहा है। भारतीय संस्कृति में विवाह संस्कार को एक विशेष महत्त्वपूर्ण स्थान है। अत: आज की नारी पढ़ी-लिखी, आत्मनिर्भर होने के कारण अन्याय, अत्याचारों और शोषण के खिलाफ आवाज उठा रही है।

शिक्षा के क्षेत्र में हमारा देश पहले से पिछडा हुआ है। ग्रामों में आर्थिक विपन्नता और अज्ञान के कारण लोग शिक्षा के प्रति उदासीन है। शिक्षा पूरी करते समय नागार्जुन को भी अनेक समस्याओं का सामना करना पडा। यहाँ तक की अंग्रेजी स्कूल में जाने की इच्छा होते हुए भी वह जा

न सके। आजादी के बाद भारत सरकार ने शिक्षण के प्रसार एवं प्रचार के लिए अनेक योजनाएँ बनाई। नागार्जुन ने इसका अपने उपन्यासों में चित्रण किया है। 'बलचनमा' में स्कूलों की स्थिति तथा विद्यार्थियों की स्थिति पर प्रकाश डालकर दरभंगा, मधुबनी जैसे शहरों में मास्टरनी, डॉक्टरनी होने की बात कही है। 'नई पौध' में लडका हो या लडकी दोनों को शिक्षा देनी चाहिए यह बात लोगों के समज में धीरे-धीरे आने लगी है। 'रतिनाथ की चाची' में शुभंकरपूर में शिक्षा प्राप्ति का अधिकार ब्राह्मणों ने अपने पास रखने का जिक्र किया है। नागार्जुन ने गरीबी को ही ग्राम जीवन की मूल समस्या माना है जिसके कारण लोग शिक्षा नहीं ले पाते है। इसका चित्रण अपने उपन्यासों में किया है।

नागार्जुन सजग तथा जागरूक रचनाकार है। उन्होंने ग्रामीण समाज में स्थित रूढ़ि-परम्परा एवं जातीयता पर करारा व्यंग्य कसा है। जब कोई लोकरीति बहुत अधिक व्यवहार में आने के कारण आवश्यक समझ ली जाती है तो वह आगे चलकर रूढ़ि का रूप धारण कर लेती है। इसी परम्परागत प्रवृत्ति का नागार्जुन ने अपने उपन्यासों में चित्रण किया है। 'बलचनमा' में किसी व्यक्ति के मर जाने पर उसके बेटे को बाल कटवाने होते है। 'नई पौध' में शादी-ब्याह अपने ही गोत्र में की जाने की परम्परा है। रूढ़ि-प्रथा-परम्पराओं के पीछे अज्ञान के साथ 'धर्म' का प्रभाव , ग्रामीण लोगों की कमजोर मानसिकता है। साहित्यकारों ने अपनी कलम से उसे स्पष्ट करने का प्रयास किया है।

सादे जीवन एवं परिवेश तथा प्रगतिशील विचारधारा ने नागार्जुन के दृष्टिकोण को व्यापकता प्रदान की। सामन्य जन के प्रति पक्षधरता इनके संपूर्ण साहित्य में अभिव्यक्त होती है। अत: नागार्जुन ग्रामीण लोगों के परिवार तथा उनके रहन-सहन से काफी परिचित है। भारतीय समाज व्यवस्था में व्यक्ति और समाज के विकास में परिवार का बहुत बडा योगदान रहा हैं। संस्कृति की रक्षा केवल परिवारों से होती है। आज भौतिकवादी प्रवृत्ति तथा पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव से परिवार बिखेर रहे है। अत: नागार्जुन ने अपने साहित्य में इसका चित्रण किया है। 'बलचनमा' में किसान मजदूरों के परिवार बडे होते हैं जिसमें कमानेवाले कम और खानेवाले ज्यादा होने के कारण परिवारों को आर्थिक विपन्नता का सामना करना पडता है इसका चित्रण हुआ है। प्राचीन काल से आज तक मानव के रहन-सहन में दिन-ब-दिन बदलाव आने लगा है। जिसका चित्रण नागार्जुन ने अपने उपन्यासों में बारिकियों से किया है। 'बलचनमा' में महेन बाबू के रहन-सहन को देखकर अचरज होता है इतना उनका रहन-सहन सुचारू रूप का था। 'बाबा बटेसरनाथ' में निम्न वर्ग, जमींदार, राजपुरोहितों की रहन-सहन कैसी थी इसका भी नागार्जुन ने चित्रण किया है। धोती,

कुर्ता, खादी, गमछा आदि जैसा सामान्य पेहराव, भोज सीधासादा, मकान झोपडीनुमा रहा है इसका चित्रण नागार्जुन ने यथार्थता से किया है।

भारत कृषिप्रधान देश है। ग्रामों में रहनेवाले किसानों का प्रमुख व्यवसाय खेती है। खेती पर ही हमारे देश की वित्तव्यवस्था अवलंम्बित है। गरीब किसानों और खेत मजदूरों की ओर नागार्जुन का हमेशा ध्यान रहा है, उनके प्रति आस्था रही है। नागार्जुन ने अपने साहित्य में किसान जमींदार के संघर्ष का चित्रण किया है। 'बलचनमा' में एक साधनहीन किसान की करूणामय गाथा है। 'रतिनाथ की चाची' में जमींदारों द्वारा किसानों पर किये अत्याचार, तथा किसान आन्दोलन का भी दर्शन मिलता है। पीड़ित और शोषित किसान वर्ग पर अत्याचार होते हैं, तो ये तिलमिला उठते है। 'बलचनमा' का जिक्र आते ही एक बार नागार्जुन रो भी पडे थे।

स्वाधिनता प्राप्ति के बाद सरकारने ग्रामों के विकास के लिए अनेक विकास योजनाएँ चलाई। लेकिन भ्रष्ट नेता और सरकारी अफसरों के कारण इसका लाभ ग्रामीण जनता तक पहुँचा ही नहीं। ग्रामों की अपेक्षा नगरों में विकास अधिक होता गया। ग्राम पिछडे थे पिछडे ही रहे। नागार्जुन ग्रामों से जूडे होने के कारण इन सारी परिस्थितियों का चित्रण उन्होंने अपने उपन्यासों में किया है। अत: सहज जीवन के चितेरे नागार्जुन अपने व्यक्तिगत जीवन में जितने सहज तरिके से जीवन जीते हैं साहित्य में उतनी ही सहजता से अभिव्यक्त हुआ है।

समाज की निरन्तर जीवन प्रक्रिया आर्थिक स्थिति पर निर्भर है। यहाँ पर नागार्जुन ने ग्रामीण लोगों 'अर्थ' के अभाव में अभावग्रस्त जिन्दगी का सामना करते-करते रोटी-कपडा और मकान इन मूल आवश्यकताओं से वंचित रहते है। अत: किसानों और उनके परिवारवालों के क्रंदन उनकी सिसकियों को नागार्जुन ने देखा है, भोगा है। इससे प्रभावित होकर उन्होंने अपने कथा साहित्य में ग्रामीण समाज में अर्थ से निर्माण होने वाली समस्याओं में गरीबी एवं बेरोजगारी, जमींदारों की नीति, सरकारी योजनाओं का अभाव, ग्रामीण लोगों के व्यवसाय, कृषिव्यवस्था तथा उनके शोषण का यथार्थ चित्रण किया है। 'बलचनमा' में एक साधनहीन किसान को जमींदारों के अत्याचारों की वजह से आर्थिक विपन्नता का सामना करना पडता है। गरीब, असहाय स्त्रियों को भी इनके अत्याचारों को सहना पडता है।

नागार्जुन का साहित्य जीवन की आर्थिक कुंठाओ और घुटन को लेकर लिखा गया है। उन्होंने भारत के ग्रामों की गरीबी एवं बेरोजगारी देखी है। गरीबी के कारण ही देहातियों के जीवन

में यातनाओं को सहना पडता है, अर्थाभाव की समस्या का भी सामना करना पडता है। 'बलचनमा' में बलचनमा को गरीबी एवं बेरोजगारी की वजह से जमींदारों के यहाँ काम करना, उनका जूठन खाना तथा उन्होंने दिया हुआ पहनना और अपना जीवन जीना पडता है। 'नई पौध' में खोखा पंडित द्वारा गरीबों, किसानों का आर्थिक शोषण करने का चित्रण मिलता है।

भारतीय समाज व्यवस्था विभिन्न आर्थिक स्तरों में विभाजित है। प्रगतिवादी साहित्यकारों ने इस व्यवस्था का कड़ा विरोध किया है। साम्राज्यवादी व्यवस्था, स्तरीय रचना मानव में दरारें पैदा करती है, परंतु यह सच है समाज कितना ही प्रगत रहे उसमें यह स्तर होगें ही। शोषण नीति को बढ़ावा देने वाले स्तर हानिकारक है। इनकी ओर साहित्यकारों ने संकेत किया है। नागार्जुन वर्गहीन, स्तरहीन समाज व्यवस्था चाहनेवाले प्रगतिवादी साहित्यकार है। ग्रामजीवन का आर्थिक संघर्ष देखते समय अर्थस्तरीय समाज व्यवस्था पर सोचना अनिवार्य है, ऐसा उनका मानना है। उन्होंने अपने उपन्यासों में इसका चित्रण किया है। 'रतिनाथ की चाची में डोमिन, चमाइन, ब्राह्मणी आदि जाति की स्त्रियों की आर्थिक श्रेणियाँ अलग-अलग है। 'बलचनमा' में गिरहथ, बनिहार, जन-जनी, कल्लर-भिखमंगा जैसी विविध आर्थिक श्रेणियों के जाति का उल्लेख है। 'बाबा बटेसरनाथ' में नागार्जुन ने जायदाद के आधार पर आर्थिक स्तरियता का चित्रण किया है।

नागार्जुन ने अपने उपन्यासो में ग्रामीण जीवन के साथ ग्रामों के लोगों के व्यवसायों के बारे में भी सोचा है। व्यवसाय सामाजिक वर्ग विभाजन की एक कड़ी है. ग्रामीण लोग अपनी जीविका चलाने के लिए कुछ ना कुछ व्यवसाय करते है। व्यवसाय के नौकरी, उदयोग, व्यापार आदि स्तर है। ग्रामों के लोगों का प्रमुख व्यवसाय खेती ही रहा है। आज किसान खेती के साथ-साथ, पशुपालन , मुर्गीपालन आदि सह-व्यवसाय करते है। वर्तमान में तो लोग 'ग्रीन हाऊस' जैसे किंमती व्यवसायों की ओर परिवर्तित हुए है जो विकास का प्रतीक है। नागार्जुन के उपन्यासों में इसका वर्णन नहीं है। देहातों में लोग आज भी परम्परागत पद्धति से खेती कर रहे है जिससे अनाज की उपज अच्छी नहीं हो पा रही है। परिणामस्वरूप किसानों के आर्थिक परिस्थिति में सुधार नहीं हुआ है। 'बलचनमा' में खुद बलचनमा साधनहीन किसान होने के साथ-साथ भैंसे चरवाने का भी काम करता है। 'बाबा बटेसरनाथ' में लेखक ने एक बटवृक्ष के माध्यम से वहाँ के जमींदारों के सूद पर कर्जा देने के व्यवसाय पर प्रकाश डाला है। नागार्जुन ने अपने उपन्यासों में ग्रामीण लोगों के व्यवसायों का चित्रण यथार्थता से किया है।

नागार्जुन ने राजनीतिक विचारों में वर्तमान व्यवस्था के प्रति सहानुभूति तथा साम्यवादियों के प्रति पक्षधरता का भाव सदा रहा है। नागार्जुन का विचार है, "15 अगस्त, 1947 से पहले का वह राजनीतिक मैदान बहुत बदल गया है, दाँवपेच बदल गये हैं, बोली बदल गयी है, इशारा बदल गया है, पहले वाला वह लक्ष्य जाने किधर ओजल हो गया ? " अत: लेखक वर्तमान व्यवस्था से चिंतित है क्योंकि सत्ता पक्ष के लोगों का कोई चरित्र ही नहीं रहा वे भ्रष्ट एवं विलासी हो गये हैं। देशभक्ति, सेवा का भाव समाप्त हुआ है। नागार्जुन का ध्यान हमेशा शहरी जीवन की अपेक्षा ग्रामीण जीवन पर ही अधिक रहा है। अत: इसकी झाँकी हमें उनके उपन्यासों में मिलती है। आजादी के बाद भ्रष्ट, खोखली राजनीति, भ्रष्ट नेता, पनपता भ्रष्टाचार, नेताओं की चारित्र्यहीनता, नारेबाजी, झूठे आश्वासन, अकार्यक्षमता, कुर्सी की होड, नेताओं की कथनी और करनी में अंतर आदि का यथार्थ चित्रण अपने उपन्यास साहित्य में किया है।

आजादी के पहले राजनीति स्वतंत्रता प्राप्ति का अस्त्र थी, उदारनीति, समानता की प्रवृत्ति थी। सत्ता देश भक्ति का साधन थी। अब स्वार्थ-पूर्ति, पद प्राप्ति का माध्यम बनी है। राजनीतिक दल सत्ता पाने के लिए भ्रष्ट चारित्र्यहीन नेताओं को टिकट दे रहे हैं। आज राजनीति का स्वरूप 'सर्वान्ति सुखाय' की अपेक्षा 'स्वसुखाय' के लिए होने लगा है। सत्ता को हासिल करने के लिए यह लोग धर्म, जाति एवं भाषा के नाम पर वोटों की भिख जनता से मांगते है और चुनाव जितने के बाद दिए हुए वादों को भूल जाते है। ग्रामों की सुधार की अपेक्षा वहाँ के लोगों का राजनीतिक शोषण करते है। इसके लिए वे गुण्डागर्दी, मार-पीट, कत्ल, डकैती को करवाते है। अत: भ्रष्ट राजनीति पर व्यंग्य कसते हुए नागार्जुन ने 'रतिनाथ की चाची' में नेतागण के साथ कार्यकर्ताओं की स्वार्थी होने की बात कही है। 'बाबा बटेसरनाथ' में राजनीतिक उथल-पुथल का देशव्यापी विराट प्रदर्शन होने की बात कही है। आजादी की आंदोलन का यथार्थ चित्रण किया है।

वर्तमान में राजनीति को स्वार्थी और अवसरवादी नेता ने भ्रष्ट कर दिया है। उन्होंने सत्ता का प्रयोग धन कमाने के लिए किया। अवसरवादी नेता मौका देखकर एक दल से दूसरे दल में जाने लगे। यहाँ पर उनकी 'दलबदलू नीति' के दर्शन होते है। इन भ्रष्ट नेताओं की वजह से ग्रामों में सुधार नहीं हो रहा है। वर्तमान राजनीति में नैतिक मूल्य, आदर्श, सच्चाई, ईमानदारी नहीं रही है। 'रतिनाथ की चाची' में किसान जमींदार संघर्ष को अवसरवादी नेता चौपट करते है और मुकदमा लडते-लडते उन बेचारों का बुरा हाल होता है। राजनेताओं की निष्क्रियता, अदूरदर्शिता, स्वार्थ लिप्सा के

कारण अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए आज भारतीय प्रजातंत्र जनता को पुकार रहा है। इस प्रकार 'बलचनमा' उपन्यास में नेताओं की अकार्यक्षमता पर प्रकाश डाला है।

आज राजनीतिक दल भ्रष्टाचार, आंतकवाद, सांप्रदायिकता और गुण्डों के बलबूते पर चुनाव जीतकर सत्ता हासिल कर रहे है। यहाँ पर सिर्फ पैसे ही नहीं खर्च कर रहे तो दौरे, प्रचार सभाओं का आयोजन भी नेता कर रहे हैं। आज तो चौराहें चौराहें पर नेताओं के लम्बे चौडे चुनावी पोस्टर लगाए जाते है। चुनाओं के कारण ग्रानों का सामजिक जीवन ही ध्वस्त हो गया है। नेता चुनाव के वक्त सिर्फ वादें करते है निभाते नहीं इस पर प्रकाश डाला है। 'रतिनाथ की चाची' में भी नेता गण चुनाव के वक्त विकास योजनाओं के वादें करते है मगर उसे पूरा नहीं करते यही वर्तमान राजनीति का प्रमाण है। यहाँ पर लेखक ने चुनाव प्रक्रिया के साथ-साथ नेताओं पर भी करारा व्यंग्य कसा है। आज राजनीति सत्ता प्राप्ति का साधन हुआ है। आजादी के बाद नेता लोग स्वार्थी और भ्रष्टाचारी बन गए। ऐसे भ्रष्टाचारी, स्वार्थी नेताओं ने अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए और सत्ता को बनाए रखने के लिए बेईमानी, गुण्डागर्दी आदि अस्त्रों को अपनाया । इसका चित्रण यथार्थता से नागार्जुन ने अपने उपन्यासों में किया है।

आज ग्रामीण जीवन में वर्तमान राजनीतिक स्थिति में धीरे-धीरे परिवर्तन हो रहा है। आज शिक्षा प्रसार तथा प्रचार के कारण राजनीतिक सुधार, संविधान की सहाय्यता, अधिकारों की प्राप्ति, सरकारी विकास योजना आदि के कारग ग्रामीण लोगों का राजनीतिक शोषण कम होकर नये विचार नई चेतना प्रवाहित हो रही है। किसान संगठित होकर अपने अधिकारों की रक्षा के लिए सक्रिय बने है। ग्रामवासी जमींदारों द्वारा होनेवाले शोषण से धीरे-धीरे मुक्त होकर चैन की साँस ले रहे है। इस यथार्थ परिस्थिति का चित्रण नागार्जुन ने अपने उपन्यास साहित्य में किया है। किसान सभा की स्थापना इसका प्रतीक है।

ग्रामीण जनता के अज्ञान और अशिक्षा के कारण उनका शोषण होता आया है। सरकारी योजनाओं और प्रकल्पों की कार्यवाही, जमीन की चकबंदी आदि करते समय सरकारी अधिकारी किसानों का शोषण करते है। जमींदार भी किसानों का शोषण करते है। किसानों के खेत, खलियान लूटते है और उन्हें झूठे इल्जाम में जेल भी भेजते है। अत: नागार्जुन की मान्यता है कि किसान, मजदूरों के संगठित हो जाने पर न कोई उनका शोषण करेगा और न कोई उनपर अत्याचार। तब ही श्रम की महत्ता स्थापित होगी और वर्गहीन समाज की स्थापना हो सकेगी।

नागार्जुन ने प्रगतिवादी विचारधारा से ग्रामीण जीवन का चित्रण यथार्थ रूप से किया है। अन्याय, अत्याचार, शोषण आदि के खिलाफ संघर्ष करनेवाले क्रांतिकारी पात्र यहाँ दिखाई देते है। जो नागार्जुन के विचारों के वाहक लगते है। 'बलचनमा' का बलचनमा किसान मजदूरों का संगठन बनाकर किसान सभा की स्थापना करके जमींदारों का मुँह तोड जवाब देता है। 'रतिनाथ की चाची' में मंत्रियोद्वारा किसानों की अपेक्षा जमींदारों को महत्त्व दिया जाता है तथा सुख सुविधाओं का भांडार उन्हीं के लिये खुला किया जाता है। यहाँ किसानों पर किये राजनीतिक शोषण के दर्शन नागार्जुन ने अपने उपन्यास में कराये है। साथ-साथ ही नागार्जुन ने भ्रष्ट नेताओं का परदाफाश किया है। आज नेताओं की भ्रष्ट नीति और सरकारी अधिकारियों की रिश्वतखोरी वृत्ति के कारण सामान्य लोग सुविधाओं से कोसों दूर है अत: ग्रामीण जनता का विकास नहीं हो रहा है। इस स्थिति के लिए जिम्मेदार आज की राजनीतिक व्यवस्था है। इस परिस्थिति को लोग बदलना चाहते है। यही सच हैं कि जब तक ऐसे नेताओं का परदाफाश नहीं होगा तब तक आदर्श नेता, सच्चे कार्यकर्ता का निर्माण नहीं होगा। संपन्न, समृद्ध देश के लिए आदर्श नेताओं की आवश्यकता है ऐसा लगता है।

गाँव के लोग राजनीति में परिवर्तन चाहते है। नागार्जुन के यह प्रगतिवादी उपन्यास हमें बार-बार इस तथ्य की ओर मुखरित करते है की गाँवों में आर्थिक, सामाजिक बुनियाद के साथ-साथ राजनीतिक बुनियाद को भी बदले बिना उपरी ढाँचा नहीं बदला जा सकता और इसमें जो परिवर्तन उपरी तौर पर किये जायेंगे वे उन तमाम विकृतियों को ही जन्म देंगे जो की मात्र आज सतह पर दिखाई दे रही है। नागार्जुन ने यथार्थ को मानव मुक्ति की सही सोच से जूडी हुई अपनी रचनाओं मे कलात्मक अभिव्यक्ति दी है। ग्रामीण जीवन की बुनियादी समस्याओं को रेखांकित करते हुए उन्होंने आजाद हिन्दुस्थान की अपनी परिकल्पना के स्तर पर उन ताकदों से संघर्ष किया है। जो उनकी इस परिकल्पना की पूर्ति में बाधक थी। अत: नागार्जुन के साहित्य को समाज, धर्म के साथ-साथ राजनीतिक विचारों से अलग-अलग रखकर नहीं देखा जा सकता ।

नागार्जुनजी के उपन्यासों में सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक पृष्ठभूमि के साथ-साथ धार्मिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि का चित्रण यथार्थता से हुआ है। नागार्जुन धर्म और संस्कृति के आदर्श तत्वों को मानते है। इनके प्रति उन्हें आस्था है। लेकिन वे कुरीतियों का विरोध भी करते है। इसलिए उनके उपन्यास साहित्य में ग्रामीण जन जीवन की धार्मिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों का सजीव चित्रण मिलता है। उनका बचपन, पढ़ाई (पाठशाला की) ग्रामीण परिवेश में संपन्न हुई है

अत: उन्होंने गाँव में धार्मिक अंधश्रद्धा से लोगों को अंधविश्वास का शिकार बनते हुए देखा है। इससे प्रभावित होकर उन्होंने अपने उपन्यासों में अंधविश्वास, रूढ़ि, प्रथा-परम्परा, मनौतियाँ, पूजा, मंत्र-तंत्र, व्रत-उपवास तथा मृतक संस्कार आदि का प्रभाव ग्रामीण लोगों पर किस तरह पडता है। तथा किन-किन समस्याओं का सामना इन लोगों को करना पडता है ? इसका यथार्थता से चित्रण किया है। अत: नागार्जुन ने समाज के विभिन्न वर्गों को अपने सहित्य में चित्रित कर अपनी निडरता का परिचय दिया है। इन्हें हम लेखक की अनुभवजन्य क्षमता का परिचय ही कहेंगे। यहाँ पर धार्मिक पक्ष तथा भारतीय समाज व्यवस्था में धर्म का महत्त्व एवं संस्कृति का महत्त्व जानने की कोशिश भी की है। आज भी देहातों में लोग अशिक्षा, अज्ञान के कारण अंधविश्वास, रूढ़ि, प्रथा-परम्पराओं के जंजीरों में जकडे हुए है। 'रतिनाथ की चाची' में ताराबाबू के कहने पर जयनाथ चाची का गर्भ गिराने का यंत्र करने के प्रसंग में अंधविश्वास के ही दर्शन होते है। 'बलचनमा' में लोग भूत-प्रेत, ओझा-मुनि पर अत्याधिक विश्वास रखते है। 'बाबा बटेसरनाथ' में बारिश के लिए लोग देवताओं की उपासना करते है। ब्राह्मण मिट्टी के शिवलिंग बनाते है। अत: इन अंधविश्वासों का नागार्जुन ने अपने साहित्य में खुलकर विरोध किया है।

रूढ़ियों एवं परम्पराओ के अनौपचारिक सामाजिक मानदण्ड से समाज का संचलन होता है। रूढ़ियाँ वस्तुत: देखा जाए तो सामाजिक मानदण्ड है क्योंकि इनकी पृष्ठभूमि में सामाजिक स्वीकृति रहती है। नागार्जुन खुद ग्रामों से जूडे होने के कारण उन्होंने ग्रामीण जीवन के लोगों में जो रूढ़ि-प्रथा -परम्पराओं का प्रचलन चलता है, इसको देखा, समझा है, जिसके कारण उनके उपन्यासों में रूढ़ि-प्रथा-परम्पराओं का यथार्थ चित्रण मिलता है। 'रतिनाथ की चाची' में 'सौराठ' प्रथा का निर्वाह हुआ है। 'बलचनमा' में जमींदारों के यहाँ ऐसी परंपरा है की जिस गाँव में लडकी ब्याही जाती है उसी गाँव में हर साल सौगात भेजी जाती है। 'बाबा बटेसरनाथ' में अशिक्षा और अज्ञान के कारण रूपऊली के ग्रामजीवन में अनेक प्रथाएँ थी। इन प्रथाओं के कारण समाज जीवन खोखला बन गया था। यहाँ पर किसी के घर कोई शुभ कार्य होता तो पाठक बाबा का पूजन अवश्य कर लेते थे। अत: नागार्जुन ने अपने उपन्यासों में ऐसी बहुत-सी प्रथा-परंपराओं का चित्रण यथार्थता से किया है।

ग्रामों में लोग अपने संकल्प पूर्ति के लिए देवी-देवताओं से मनौतियाँ मनाने की परम्परा है। ग्रामीण लोग अज्ञान और अंधविश्वास के जंजीरों में आज भी जकडे हुए है जिसके कारण स्वरूप उनमें मनौतियाँ मानने की प्रवृत्ति अब भी दिखाई देती है। नागार्जुन ने मनौतियाँ मानने की प्रवृत्ति को

ग्रामीण लोगों की मानसिक दुर्बलता माना है। अतः नागार्जुन ने अपने उपन्यासों में इन सब बातों का चित्रण किया है। 'रतिनाथ की चाची' में किताबें चोरी होने के बाद रतिनाथ के मित्र सरस्वती मैया के सामने किताबे मिलने के लिए मनौतियाँ मानते है। 'नई पौध' में बिसेसरी अपने लिए एक अच्छासा वर मिलने के लिए मनौतियाँ मानती है। 'बाबा बटेसरनाथ' में देहाती लोग मनोरथ पूरा होने पर बाबा पाठक के यहाँ धूमधाम से मनौतियाँ चढ़ाने की बात कही है। देहाती लोग मनौतियाँ मानने के साथ-साथ अपनी मनोकामना पूरी होने के हेतू या यश प्राप्ति के हेतू अपने इष्ट देवताओं की पूजा भी करते है। इसका चित्रण भी नागार्जुन ने अपने उपन्यासों में किया है। देहाती लोग अज्ञान, अशिक्षा के कारण मंत्र-तंत्र, व्रत-उपवास आदि जैसी प्रवृत्तियों पर भी विश्वास करते है। लेकिन नागार्जुन को लोगों की इस प्रवृत्ति पर खीज आती है।

भारतीय समाज व्यवस्था में विविध धार्मिक संस्कार है उनमें से मृतक संस्कार एक है। यहाँ पर लोग अपने धर्म-जाति के नियमोनुसार व्यक्ति के मरने के बाद मृतक संस्कार करते है, हिंदूओं में अग्नि संस्कारों को तो मुसलमानों में दफन आदि संस्कारों को महत्त्व है। आधुनिकीकरण या नागरीकरण की वजह से लोग इन संस्कारों को कम महत्त्व देकर अल्प समय में इन विधियों को पूरा करते है। 'रतिनाथ की चाची' में उमानाथ अपने भाई बैद्यनाथ के वर्षी पर पाँच ब्राह्मणों को भोजन देने के प्रमाण मिलते है। मृतक संस्कार और धर्म का सम्बन्ध होने के कारण इस संस्कार को महत्त्व है।

नागार्जुन को 'ग्रामीण संस्कृति' से विशेष लगाव है। ग्रामीण परिवेश में जो सांस्कृतिक कार्यक्रम होते उसमें विशेष रूचि है क्योंकि वे खुद ग्रामों से जूडे हुए है। उन्हें तीज-त्यौहार, मेले, खेलकुद, लोकगीत में विशेष आस्था रही है। अतः उनके उपन्यास साहित्य में हमे उत्सव-पर्व, तीज-त्यौहार, मेले, खेल-कुद तथा लोकगीतों का चित्रण यथार्थता से मिलता है। ग्रामों में रीति-रिवाजों के महत्त्व को भी चित्रित किया है। 'बलचनमा' में बारात में औरतों को साथ नहीं ले जाने का रिवाज है। तो 'बाबा बटेसरनाथ' में बटवृक्ष के पेड को नरमुण्ड तथा बकरियों की बलि चढ़ाने का पुराना रिवाज है। अतः नागार्जुन नें इन रिवाजों का विरोध किया है। इसका वास्तविक चित्रण हमें उनके उन्यासों में मिलता है।

'बलचनमा' दुर्गापूजा तथा भाईदूज के त्यौहारों को ग्रामीण लोग धूमधाम से मनाने की सांस्कृतिक भावना का चित्रण किया है। 'बाबा बटेसरनाथ' में 'देव-उठान' के त्यौहार मनाने का चित्रण हुआ है। ग्रामीण लोगों के मेले, पर्वो तथा त्यौहारों का आयोजन तथा उन्हें मनाने की

प्रामाणिक भावना में हमे निश्चल ग्रामीण संस्कृति के दर्शन होते है। उत्सव, पर्व, तीज-त्यौहार, तथा लोकगीतों का सम्बन्ध धार्मिकता से होने के कारण ग्रामों में लोग इसे बडे धूमधाम से मनाते है। लोकगीत तो किसी भी देश की लोक-संस्कृति और लोक-जीवन के वास्तविक परिचायक होते है। लोकगीतों के प्रयोग से नागार्जुन के उपन्यासों की रंजकता बढ़ गयी है और आँचलिकता में स्वाभाविकता आ गयी है। बोली, संस्कृति, रहन-सहन, वेशभूषा, केशभूषा आदि का वास्तविक चित्रण नागार्जुन द्वारा लोकगीतों में हुआ है। देहातों में फसल कटाई करते समय, होली के अवसरपर, या सुख-दु:ख के समय लोकगीत गाते है। इसका चित्रण यथार्थता से नागार्जुन ने अपने उपन्यासों में किया है जो रोचक लगता है। अत: नागार्जुन के उपन्यासों में धार्मिकता एवं सांस्कृतिकता का विशेष महत्त्व रहा है।

नागार्जुन सफल रचनाकार रहे है। अत: उनके आलोच्य उपन्यासों के अध्ययन के उपरांत हम कह सकते हैं कि, इन उपन्यासों का केंद्र 'ग्रामजीवन' है। ग्रामजीवन पर ध्यान केंद्रित करके ग्रामजीवन के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक संदर्भो को चित्रांकित किया है। नागार्जुन ने अपने उपन्यासों में सिर्फ ग्रामीण समस्याओ का चित्रण ही नहीं किया तो इस समस्याओं के समाधान भी प्रस्तुत किए है। उनका साहित्य मानवहित, समाजकल्याण, ग्राम पुर्ननिर्माण का प्रमाण है। उनका साहित्य पढ़ने पर पुरे भारतीय ग्रामीण समाज के दर्शन होते है, ऐसा लगता है। अत: ग्रामजीवन के सच्चे चितेरा नागार्जुन है, ऐसा कहना अनुचित न होगा। वे संघर्ष प्रिय है, किन्तु उनका संघर्ष जीवन विध्वंसात्मक पक्ष पर बल न देकर उसके रचनात्मक पक्ष पर बल देता है। वे एक अत्यंत जागरूक, चिंतक, समाजसुधारक एवं श्रेष्ठ साहित्यकार है।नागार्जुन के उपन्यासों का अध्ययन करने से वह ऐसे साहित्यकार के रूप में हमारे सामने आते है, जो सुरज की तरह सदा प्रकाशमान है, ऐसा मुझे लगता है।

-----x-----